Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 614–618

किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन

रीना कश्यप [1], डॉ कविता शर्मा [2]

[1]शोधार्थिनी, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ. उत्तर प्रदेश
[2]सहायक–आचार्य, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ. उत्तर प्रदेश

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.4266

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

बालक जन्म के समय असहाय होता है, उस असहाय शिशु को सुदृढ़ बनाने का कार्य उसके अभिभावकों के द्वारा किया जाता है। माता–पिता बालक के प्रशिक्षक व सहायक होते हैं। यदि घर का वातावरण बच्चे के अनुकूल है तो माता पिता बालक को गढ़ने में सफल होते ळें प्रो0 लिस्टर स्मिथ के अनुसार – एक विद्यालय को केवल सैद्धांतिक ज्ञान देने वाला स्थान ही नहीं होना चाहिए बल्कि एक विद्यालय को बालकों को स्थाई ज्ञान देने वाला स्थान होना चाहिए तथा विद्यालय का वातावरण अध्यापकों की शिक्षण क्षमता बढ़ाने वाला और शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होना चाहिए। छात्रों को अभिभावकों के द्वारा परिवार में मजबूत नींव प्रदान की जाती है। और इस नींव पर स्कूलों में महल के रुप में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को निखारा जाता है तथा महल रुपी छात्र को लोगों के द्वारा कंगूरों से सजाया जाता है। ज्ञान प्राप्त करके एक छात्र जो जन्म के समय एक असहाय, दुर्बल तथा मस्तिष्क एक कोरी स्लेट के समान था शिक्षित होकर वह उपलब्धियों के शिखर को प्राप्त करता है जिससे वह एक अधिकारी का पद प्राप्त करता है यही उसकी शैक्षिक उपलब्धि है।

Keywords: पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना

जिस प्रकार खेती, व्यवसाय या उद्योग आदि में उपलब्धि प्राप्त करने के लिए पूरा ध्यान लगाना पड़ता है उसी प्रकार छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए छात्रों के साथ–साथ उसके परिवार, विद्यालय तथा शिक्षकों को भी ध्यान देना पड़ता है। मनुष्य के जीवन की प्रगति और ह्रास का प्रधान कारण उसके व्यक्तित्व का स्तर होता है। यदि व्यक्तित्व संस्कारवान तथा विकसित है तो समझा जाता है कि उत्कृष्ट अभ्यूदय के सारे द्वार खुल गए हैं और यदि व्यक्तित्व गया गुजरा तथा हेय प्रकृति का हो तो समझना चाहिए कि वातावरण या परिस्थितियों में कहीं कुछ कमी रह गई होगी। जिससे चित्त, व्यवहार और चरित्र में विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं। जिससे छात्र न तो स्वयं की ही उन्नति कर पाता है और न ही अपने परिवार वालों को अपनी शिक्षा का कोई फल ही प्रदान कर पाता है। जिससे परिवार की परिस्थितियां विघटनकारी हो जाती हैं तथा समस्याएं और अधिक उलझती जाती हैं। इसमें दोष किसी का भी हो छात्र का हो, अभिभावकों का हो या शिक्षकों का पाठ्यक्रम या वातावरण का हो। अतः छात्रों को उनके परिवार व अभिभावकों के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि के लिए अच्छी परिस्थितियां प्रदान की जानी चाहिएं। छात्रों को श्रम, शिष्टाचार, मितव्ययता तथा सहयोग की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। बच्चों को घर में ऐसा साहित्य उपलब्ध कराना चाहिए जिसे पढने से छात्र जीवन पथ पर आगे बढ़ सकें। इसलिए छात्रों को परिवार के सदस्यों व साहित्य के द्वारा स्कूलों में ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए जिससे छात्रों को अपनी क्षमताओं को विकसित करने का पूर्ण अवसर मिल सके एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उन्नत हो सके। लेकिन यह खेद का विषय है कि आज हमारे चारों ओर लेखकों, प्रकाशकों तथा बुक सेलरों की भरमार है, लेकिन उनके द्वारा लिखित साहित्य इतना सुदृढ़ नहीं है कि वह छात्रों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि का विकास कर सके। परिवार को व्यक्तित्व का विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि को बढाने वाले साहित्य को घरों में अवकाश के समय पढ़ने व सुनने की व्यवस्था करनी चाहिए। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के विकास में परिवार के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार में छात्रों की आवश्यकतानुसार विचार विनिमय होता रहना चाहिए। बातचीत एवं परामर्श केवल भौतिक आवश्यकताओं से ही संबंधित नहीं होते बल्कि वार्तालाप शैक्षिक उपलब्धि व चिन्तन में कैसे अपेक्षाकृत सुधार

किया जा सकता है प्रत्येक छात्र की समस्याएं अलग–अलग होती हैं तथा प्रत्येक छात्र को अपनी आवश्यकतानुसार प्रगति की ओर अग्रसर करने वाले परामर्श की आवश्यकता होती है। केवल सिद्धातों की चर्चा अथवा विवेचन कर देने से ही काम नहीं चलता बल्कि इसके लिए भिन्न–भिन्न स्तर का निर्देशन व परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए। इसके लिए बच्चे को सीधी शिक्षा न देकर किसी अन्य की घटना का वर्णन करके उस तथ्य से अवगत कराना चाहिए। यह कार्य कहानियों तथा संस्मरणों के माध्यम से और अच्छी तरह से किया जा सकता है।

2. साहित्य समीक्षा –

- उपयुक्त अनुसंधान अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, अंतः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षिक–उपलब्धि के साथ एवम् इनकी अंतक्रिया के साथ शोध कार्य नगण्य है। पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि पर हुए शोध के परिणामों के निष्कर्ष से पता चलता है कि पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान आवश्यक है।
- पाल, लाल जी राम (2022) – परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण तथा पारिवारिक वातावरण परिषदीय विद्यालयों में शैक्षणिक उपलब्धि अधिक थी।
- यादव राजेश कुमार (2022) – परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्य सार्थक अंतर है। तथा उनके सामाजिक प्रेरकों के मध्य भी सार्थक अंतर है।
- यादव, विनय प्रकाश (2022) – स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में समानता है जबकि असुरक्षा के संदर्भ में छात्राओं का पारिवारिक वातावरण छात्रों से ज्यादा संवेदनशील है।
- गुलहणे, रीता (2021) – परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में समानता होती है।

अतः सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण में समाज, परिवार एवं माता–पिता के व्यवहार का बहुत प्रभाव पड़ता है। लेकिन अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर अभी भी शोध का अभाव है।

3. शोध की सार्थकता –

एक बालक में प्रेम स्नेह अनुशासन सहयोग त्याग आदि गुणों का विकास परिवार में ही होता है। जो बालक के जीवन में मूल्यों का निर्धारण तथा उसकी क्षमताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः इसलिए आवश्यक है कि बालक को इच्छित एवं उपयोगी वातावरण मिले। बालक इस वातावरण में रहकर अपनी क्षमताओं तथा योग्यताओं को विकसित कर सके तथा देश को उन्नति के मार्ग तक ले जाने का प्रयास कर सके। भारतीय समाज में अनेक धर्म, जातियां तथा वर्ग पाए जाते हैं। इन सभी का अपना रहन सहन तथा रीति रिवाज होते हैं। इन सभी के मूल्यों तथा आदर्शों में अंतर होता है। इनके साथ रहने वाला बालक इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता क्योंकि जन्म के समय एक बालक अपूर्ण होता है। उसका पालन पोषण अकेले होकर भी समूह में होता है। समाज के साथ शिक्षा के द्वारा भी इसका विकास होता है। ब्लैचर ने परिवार की व्याख्या करते हुए बताया कि परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं, जो अभिभावकों तथा उनकी संतानों के बीच पाई जाती है। अभिभावकों के बच्चों के साथ संबंध उनके व्यक्तित्व के विकास में सहयोग करते हें। जिन बच्चों के अभिभावक अपने बच्चों की अधिक चिन्ता करते हैं या ज्यादा नियंत्रण रखते हैं ऐसे बच्चे संवेगात्मक रुप से खुद को असुरक्षित समझते हैं। तथा समाज में असमायोजित हो जाते हैं।

समस्या कथन – किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन''

प्रयुक्त पदों की कार्यात्मक परिभाषा – पारिवारिक पृष्ठभूमि : परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला है, परिवार के द्वारा दिए गए संस्कार स्थाई एवं प्रभावी होते हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि व संतान का अपने अभिभावकों से मधुर संबंध का होना बालक के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

व्यक्तित्व से तात्पर्य – शिक्षा विज्ञान के विकास ने व्यक्तित्व की धारणाओं को पूर्णतः बदल दिया है। क्योंकि व्यक्तित्व एक अत्यंत जटिल प्रकिया है। व्यक्तित्व का अर्थ एक व्यक्ति के रंग, रुप, लंबाई, मोटाई, चौड़ाई, अथवा व्यवहार तथा शारीकि संरचना के आधार पर लगाया जाता है। ये सभी गुण किसी व्यक्ति के व्यवहार का दर्पण होते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को कुछ ही गुणों की उपस्थिति मानते हैं, जबकि अन्य मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को अस्पष्ट गुण, अनिश्चित लक्षणों तथा अनेक विशेषताओं का संग्रह मानते हैं। कुछ लोग व्यक्तित्व को जन्म से प्राप्त होने वाले गुण मानते हैं जिन पर वातावरण का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य – शैक्षणिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यालय में चयनित विषयों में संतोषजनक उपलब्धि प्राप्त करना। किसी छात्र के विद्यालय के विषयों में प्राप्त उपलब्धि का पता एक लिखित प्रमाण–पत्र के रुप में चलता है। जो विद्यालय में पढ़ाए गए विषयों जैसे– अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान, कला, संस्कृत गणित आदि के मूल्यांकन के द्वारा किया जाता है। एक छात्र के लिए यह एक प्रमाण–पत्र एक वर्ष की मेहनत का परिणाम होता है। छात्र को यह प्रमाण–पत्र विषयों की लिखित परीक्षा के साथ–साथ उसकी उपस्थिति, मानसिक स्तर तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के उपरान्त प्राप्त होता है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

1 किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

2 किशोंरों ;छात्राओंद्ध की शैक्षिक उपलब्धि व व्यक्तित्व व ज्ञात करना।
3 किशोंरों ;छात्राओंद्ध की शैक्षिक उपलब्धि व व्यक्तित्व ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं – 1 किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।
2 किशोंरों ;छात्राओंद्ध के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि कोई प्रभाव नही पड़ता है।
3ण्किशोंरों ;छात्रोंद्ध के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि कोई प्रभाव नही पड़ता है।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। यह मात्रात्मक उपागम पर आधारित शोध अध्ययन है।

● न्यादर्श आकार एवं चयन विधि – किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 के छात्र एवं छात्राओं को रैंडम न्यादर्श विधि के द्वारा चुना गया। आंकड़े एकत्रित करने के लिए तीन जिलों हापुड़ मेरठ एवं गाजियाबाद जिले के छः–छः माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया जिसमें प्रत्येक विद्यालय से 26 छात्र एवं 26 छात्राओं को न्यादर्श के लिए चुना गया। इस प्रकार से सभी विद्यालयों से कुल 936 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

5. शोध का परिसीमन

शोध अध्ययन का परिसीमन इस प्रकार किया गया है –
1. शोध अध्ययन हापुड़ मेरठ एवं गाजियाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. शोध अध्ययन 434 छात्रों तथा 434 छात्राओं तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन शासकीय तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।

6. अध्ययन में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध में किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः यहां पर स्वतंत्र चर पारिवारिक पृष्ठभूमि है तथा आश्रित चर व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि है। प्रस्तुत शोध कार्य में सम्मिलित चर निम्न प्रकार हैं –
स्वतन्त्र चर :– पारिवारिक पृष्ठभूमि। आश्रित; चर :– व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि।
अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में चरों को एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
1. डॉ पी. पी. अजीज एवं डॉ रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित अंतर्मुखता, बहिर्मुखता इन्वेंट्री।
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए कक्षा 9वीं की परीक्षा के अंक–पत्र एकत्रित किए गए।

जनसंख्या – शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में कक्षा 10वीं के कुल 936 छात्र एवं छात्राओं का शोध कार्य के लिए चयन किया गया, जिसमें 468 छात्र, तथा 468 छात्राओं को चुना गया है।

आंकड़ों का साख्यिकीय विश्लेषण – आंकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णात्मक साख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया।

माध्यमान – माध्यमान को अंकगणितीय माध्य या औसत भी कहा जाता है। जब किसी एक समूह के आकड़े अथवा प्राप्त अंकों को जोड़कर समूह की संख्या से विभाजित किया जाता है तो प्राप्त राशि को उस समूह के आंकड़ों का मध्यमान कहा जाता है।

प्रमाणिक विचलन ";ण्क्ण्द्ध . दिए हुए प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गो में मध्यमान का वर्गमूल ही प्रमाणिक विचलन कहलाता है। दूसरे शब्दों में, यदि दिए हुए प्राप्तांकों के माध्यमान से प्राप्तांकों का विचलन ज्ञात किया जाए (विचलन ज्ञात करते समय धन व ऋण चिन्हों का ध्यान नही दिया जाता है) तथा प्रत्येक विचलन का वर्ग किया जाये ,फिर इन वर्गों को जोड़कर उसकी संख्या एन से भाग देकर प्राप्त संख्या का वर्गमूल निकालने से जो संख्या प्राप्त होती है, वह प्रमाणिक विचलन ";जंदकंतक कमअपंजपवदद्ध कहलाता है।

सहसंबन्ध – सहसम्बन्ध का अर्थ है, दो समंक श्रेणियों या पद मालाओं के बीच किसी प्रकार का पारस्परिक सम्बन्ध होता है। जैसे – बाजार में किसी वस्तु की मांग बढ़ती है तो उसका विक्रय मूल्य भी बढ़ जाता है। इसी प्रकार, यदि एक समंक श्रेणी में परिवर्तन दूसरे समान श्रेणी को प्रभावित करता है और वहाँ एक 'कारण सम्बन्ध' दो समंक श्रेणियों के बीच है तो इसी को दोनों के बीच सहसम्बन्ध कहते है।

'टी' अनुपात – ऐसी परिस्थिति में लागू किया जाता है, जहां दो स्वतन्त्र समूह के मध्य अन्तर की तुलना की जाती है। इस परिकल्पना के परीक्षण का कथन होता है– ''समूहों के माध्य में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। जब समूहों का आकार बड़ा होता है तो हम 'टी' परीक्षण न करके सी0 आर0 ;ब्त्ण्द्ध का प्रयोग करते हैं।

परिकल्पना : 1 – किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या – 1

शैक्षिक उपलब्धि	संख्या ;छद्ध		मध्यमान ;डमंदद्ध	मानक विचलन ";क्द्ध	सहसंबंध (तद्ध	ज = $\frac{r\sqrt{n\ -2}}{\sqrt{1-r^2}}$	सार्थकता का स्तर
पारिवारिक पृष्ठभूमि (कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं के किशोर)	किशोर छात्र	468	62	12	0.0862	1.8749	अस्वीकृत
	किशोर छात्राएं	468	58	13			

सांख्यिकीय विश्लेषण – तालिका संख्या 1 – प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण : – उपरोक्त तालिका में किशोर छात्रों का मध्यमान 62 एवं एस.डी. का मान 12 है जबकि छात्राओं का मध्यमान 58 एवं एस, डी का मान 13 है। यहां परपारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसम्बन्ध 0ण्0862 है, तथा टी का मान 1ण्8749 है जो टेबल वैल्यू से कम है। यह मान सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परीकल्पना संख्या एक अस्वीकार की जाती है।

व्याख्या – उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि परिकल्पना किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही ंहै। परीकल्पना अस्वीकार की जाती है। निष्कर्षत' कह सकते हैं कि पारिवारिक पृष्ठभूमि का छात्र एवं छात्राओं पर प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। अतः छात्र एव ंछात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि असमान पाई गई। इसके आधार पर कह सकते हैं कि पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर होता है।

परिकल्पना : 2 – किशोरों **(छात्राओं)** के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या – 2

शैक्षिक उपलब्धि		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन ";क्द्ध	सहसंबंध	ज = $\frac{r\sqrt{n\ -2}}{\sqrt{1-r^2}}$	सार्थकता का स्तर
पारिवारिक पृष्ठभूमि (कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं की छात्राएं)	कामकाजी माताओं की छात्राएं	234	58	29.136	0.779	18.879	स्वीकृत
	गैरकामकाजी माताओं की छात्राएं	234	58	29.28			

सांख्यिकीय विश्लेषण – तालिका संख्या–2 उपरोक्त तालिका में(कामकाजीमाताओं की छात्राए) किशोर छात्राओं की संख्या 234 है। संख्या का मध्यमान 58 है। एस.डी. का मान 29ण्136 है। जबकि (गैरकामकाजी माताओं की छात्राए) छात्राओं की संख्या 234 है। संख्या का मध्यमान 58 एवं एस, डी का मान 29ण्28 है। यहां पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसम्बन्ध 0ण्779 है, जबकि टी वैल्यू 18ण्879 है जो 5ःसार्थकता स्तर पर एवं 1ः सार्थकता स्तर पर टेबल मान से अधिक है जो पूर्ण रुप से सार्थक है। अतः कह सकते हैं कि कामकाजीमाताओं की छात्राओं एवं गैरकामकाजी माताओं की छात्राओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि में सार्थक सहसंबंध है अतः परिकल्पना छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि ;कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं की छा़त्राओंद्ध का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है। स्वीकार की जाती है।

व्याख्या – उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक पृष्ठभूमि का ;कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं की छा़त्राओंद्ध का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है। पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित नहीं होती है। अतः माताओं के कामकाजी होने का या गैरकामकाजी होने का छा़त्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित नहीं होती है।

7. शोध निष्कर्ष

शोध के आंकड़ों के विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि– पारिवारिक पृष्ठभूमि (कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं) का छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है प्रत्येक परिवार व विद्यालय को बालक के लिए अच्छा व अनुकूल वातावरण प्रदान करना चाहिए। अनुकूल वातावरण में ही सीखने की क्रिया को व्यवस्थित किया जा सकता है। प्रत्येक अभिभावक को अपने बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए जहां बच्चा अपनी कठिनाइयों को अपने माता–पिता को बता सके। अभिभावक को अपने बच्चों की कठिनाइयों का समाधान करने का प्रयास करना चाहिए।

परिकल्पना : 3 – किशोरों **(छात्रों)** के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

विवरण	मध्यमान	मानक विचलन ";क्द्ध	सहसंबंध	ज = $\frac{r\sqrt{n\ -2}}{\sqrt{1-r^2}}$	सार्थकता का स्तर
छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि	62	12	.0.00116	0.02277	अस्वीकृत
छात्रों **का** व्यक्तित्व	04	08			

0.05 स्तर पर ज का मूल्य –1.96 , 0.01 स्तर पर ज का मूल्य –2.58

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण : –उपरोक्त तालिका में किशोरों की संख्या 468 है। शैक्षिक–उपलब्धि का मध्यमान 62 एवं एस.डी. का मान 12 है। जबकि किशोरों के व्यक्तित्व का मध्यमान 4 एवं एस.डी. का मान 08 है। यहां पर किशोरों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक–उपलब्धि के बीच सहसम्बन्ध . 0ण्00116

है, जबकि टी–मान 0ण्02277 है जो 5: सार्थकता स्तर पर मानक सारणी मान से कम है, जो सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना किशोर छात्रों के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक–उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है, अस्वीकार की जाती है।

शोध निष्कर्ष – शोध के आंकड़ों के विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्रों के व्यक्तित्व पर उनकी शैक्षिक–उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक परिवार व विद्यालय को छात्रों के लिए एक अच्छा व अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए। जिस प्रकार एक बालक परिवार में बोली जाने वाली भाषा को सीखता है, परम्पराओं के प्रति धारणा बनाता है। उसी प्रकार आस–पास के वातावरण की क्रियाकलापों से प्रभावित होता है और अपने से प्रेरित होकर एक अवधारणा बना लेता है। ये प्रक्रिया ही व्यक्तित्व का रूप धारण कर लेती है। अनुकूल वातावरण में ही सीखने की क्रिया को व्यवस्थित किया जाता है। प्रत्येक अभिभावक को अपने अपने बच्चों को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए जहां बच्चा अपनी कठनाईयों को अपने माता–पिता को बता सके।

सुझाव – 1 विद्यार्थियों की माताओं की भूमिका लड़कों एवं लड़कियों दोनों के लिए होती है।
2 विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व पर उनके माता–पिता की जागरूकता ही प्रभाव डालती है।
3 कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं की कार्यशैली का प्रभाव किशोर लड़के एवं लड़कियों पर पड़ता है। उचित सलाह देनी चाहिए।
4 अभिभावकों के द्वारा विद्यार्थियों को समय–समय पर जीवन उपयोगी बातों से अवगत कराना चाहिए। श

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ – 1 अध्ययन को अधिक विश्वसनीय एवं वैध बनाने के लिए एक से अधिक शोधकर्ताओं को अध्ययन करने हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।
2 समय तथा धन की उपलब्ध्ता को बढ़ाकर अध्ययन में अधिक व्यापकता, गहनता तथा लगनशीलता लाने का प्रयास किया जा सकता है।
3 प्रस्तुत शोध अध्ययन को तीन ही चरों तक सीमित न करके कई चरों के परिपेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।
4 वर्तमान शोध अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। इसी प्रकार का अध्ययन स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्याथियों को लेकर किया जा सकता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा, आर. ए. : शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 2007।
शर्मा डॉ. आर. ए. (2004) साख्यिकी के मूल तत्व आर. लाल.बुक डिपो मेरठ ।
शर्मा डॉ. आर. ए. (2005) अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार, आर. लाल.बुक डिपो मेरठ।
शर्मा डॉ. आर. ए. (2005) शैक्षिक एवं मानसिक मापन, आर. लाल.बुक डिपो मेरठ ।
सिंह ए. के. (2009) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास,।
पाठक पी.डी, (2006) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ।,
गुप्ता एस. पी.(2004) अनुसंधान संदर्शिका, सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि, इलाहबाद शारदा पुस्तक भवन,
गुप्ता एस. पी.(2010) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, इलाहबाद शारदा पुस्तक भवन,
कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,
अग्रवाल जे. सी. (2007) शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,
पाण्डेय, कामता प्रसाद : अभिक्रमित अधिगम की टैक्नोलॉजी, अमिताश प्रकाशन, गाजियाबाद, सन् 1988।
भटनागर, सुरेश : शिक्षा मनोविज्ञान, इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली, 2000।
अल्पोर्ट, बर्नन और लिन्डजे : मैनुबल फॉर द स्टडी ऑफ वेल्यूज वोस्टन सन् 1960।
मल्होत्रा एस.पी., मल्होत्रा, पी.बी. व आर.एन. : शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
एस0 पी0 गुप्ता ;2017द्ध – अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि,पेज न037,38,39,40।
प्रो0 रमन बिहारी लाल – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार , पेज न0 391,394,395.।